ऑस्कर ऊदबिलाव



लेखनः नैथैनियल बैंचली

चित्रः आर्नल्ड लोबेल

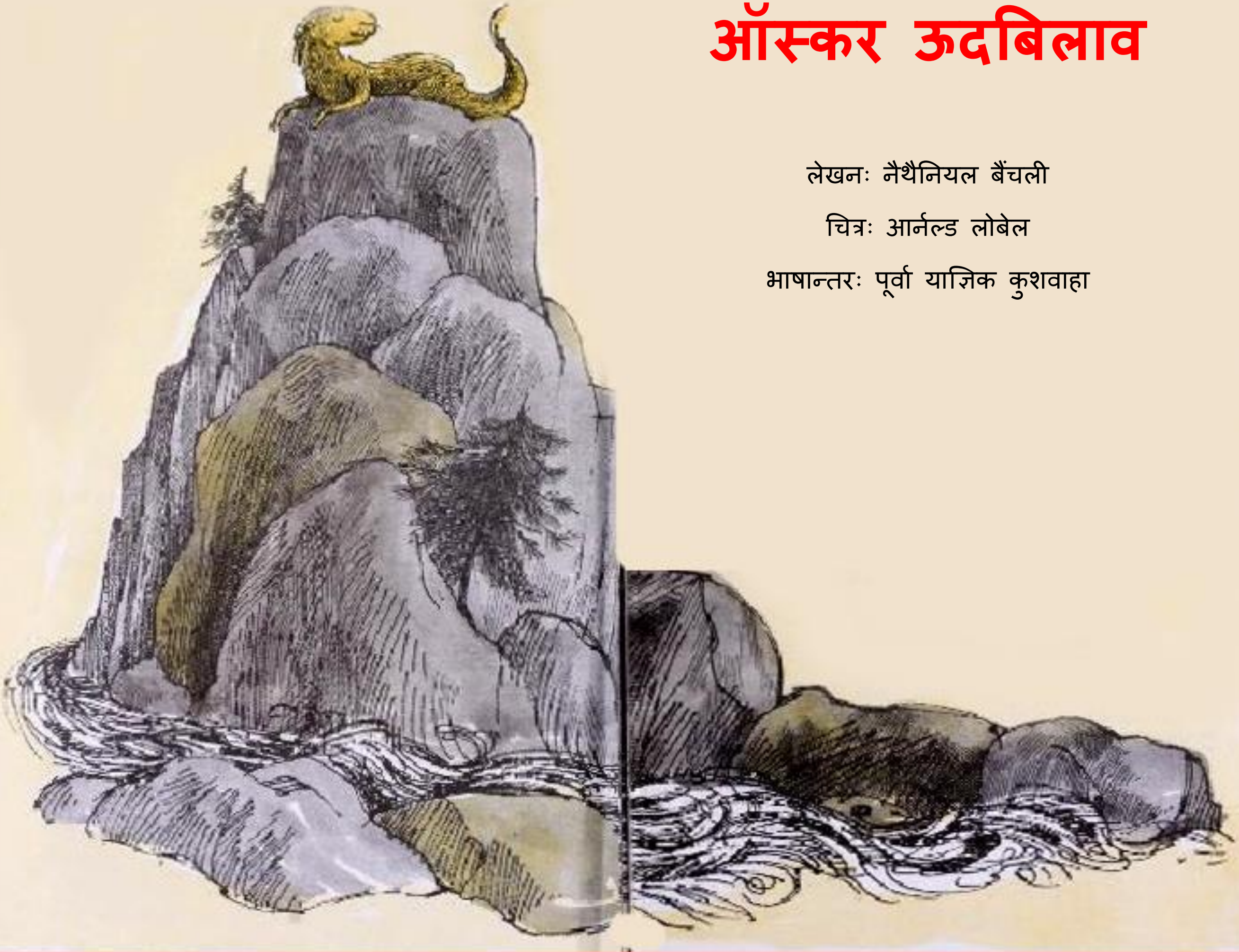
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

ऑस्कर ऊदबिलाव

लेखनः नैथैनियल बैंचली

चित्रः आर्नल्ड लोबेल

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

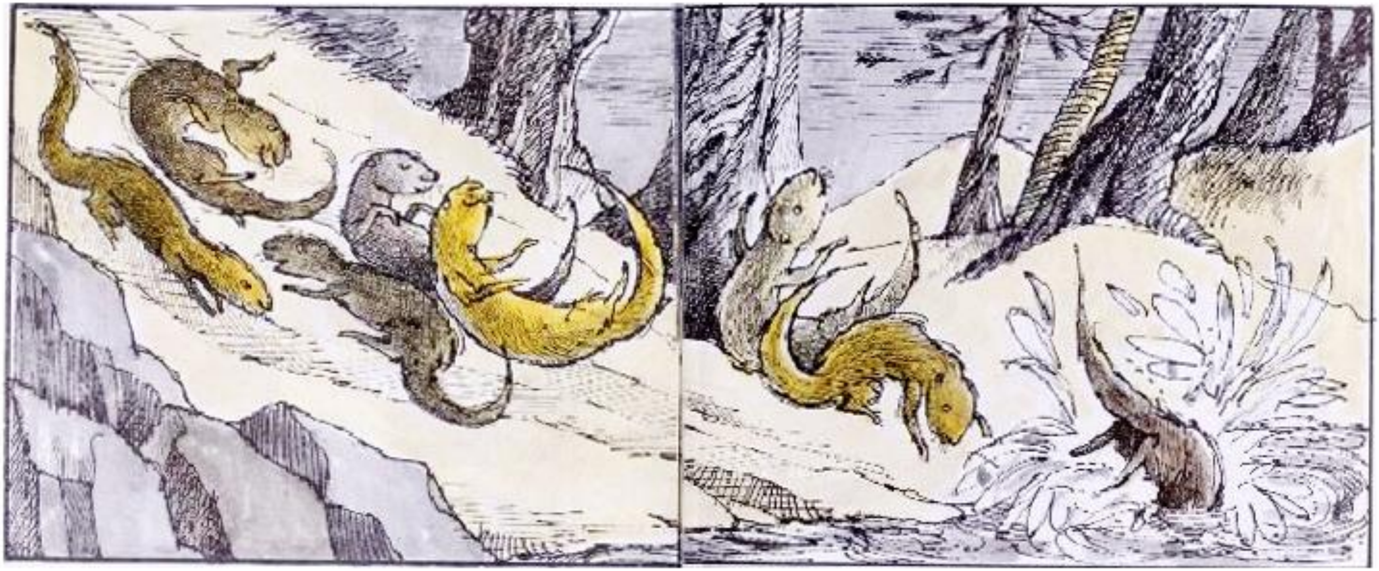




ऑस्कर नुकीले दाँतों वाला कम

उम्र का ऊदबिलाव (ऑटर) था।

वह एक ताल के किनारे रहता था।



वह अक्सर दूसरे ऊदबिलावों
के साथ ऊदबिलाव फिसलपट्टी
पर खेला करता था।

वे फिसलपट्टी के ढलान पर फिसलते,
तेज़ी से ताल किनारे आते और
झपाक!
से पानी में कूद जाते।

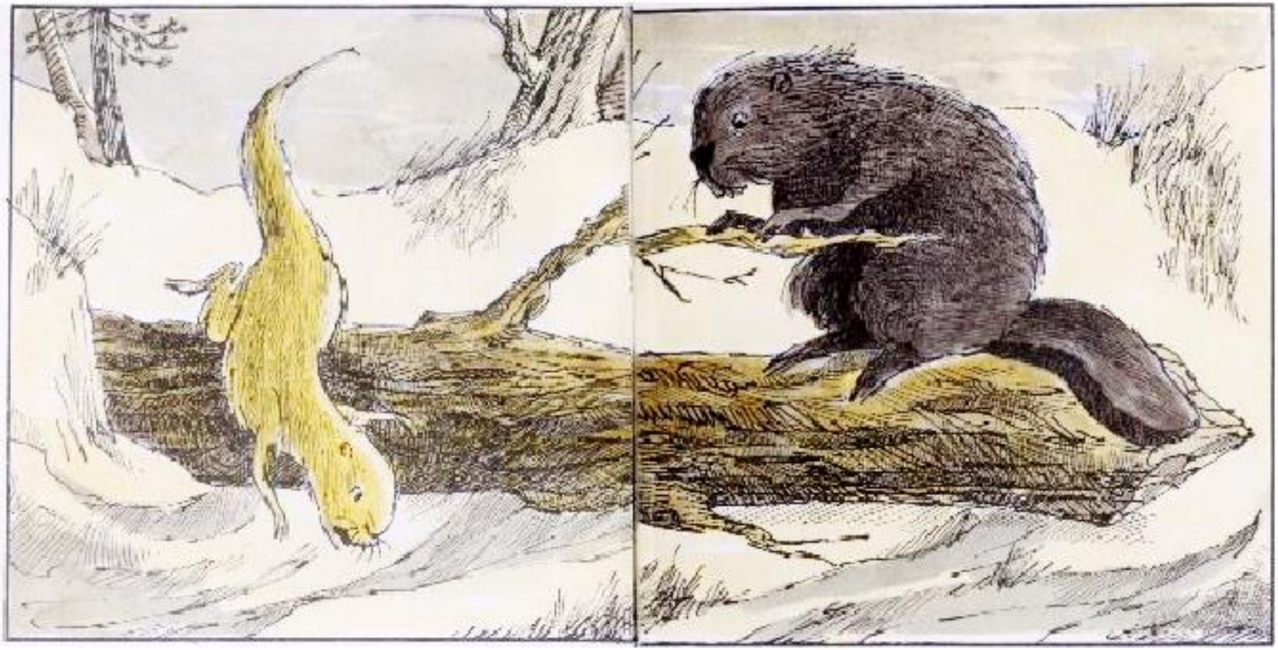


एक दिन वह

फिसलपट्टी पर अकेला था,



वह एक मोड़ तक पहुँचा ही था कि,



फटाक! वह सीधे एक पेड़ से जा टकराया।

''अरे तुम्हें आखिर यह क्या सूझा?''

ऑस्कर ने मोटी सपाट पूँछ

वाले ऊदबिलाव (बीवर) से पूछा।

''यह पेड़ ऐन मेरे रास्ते में है।''

''माफ करो,'' मोटी सपाट

पूँछ वाले ऊदबिलाव ने कहा,





“पर सर्दियाँ आने वाली हैं,

और मुझे एक घर बनाना है।”

और वह एक और पेड़

को काटने में जुट गया।



घर लौट ऑस्कर ने जो कुछ हुआ

वह अपने पिता को बताया।

''तो तुम एक और फिसलपट्टी बना लो,''

ऑस्कर के पिता ने सुझाया।

पिता के मुँह में मछलियाँ भरी थीं।

''बहुत सारी दूसरी जगहें भी तो हैं।''

''ठीक है, मैं यही करूँगा,'' ऑस्कर ने कहा।

''मैं उस मोटी पूँछ वाले ऊदबिलाव को दिखा दूँगा।

एक ऐसी फिलपट्टी बनाऊँगा

जो ठेठ ऊपर तक,

वहाँ, उस पहाड़ तक जाती हो!''

''मैं तो ऐसा नहीं करता,''

पिता ने जवाब में कहा।

''ऐसा करने पर तुम पानी से,

बहुत दूर हो जाओगे।''

''पानी की ज़रूरत भला किसे है?'' ऑस्कर बोल पड़ा।

''तुम्हें ज़रूरत है, पानी की,'' पिता ने चेताया।

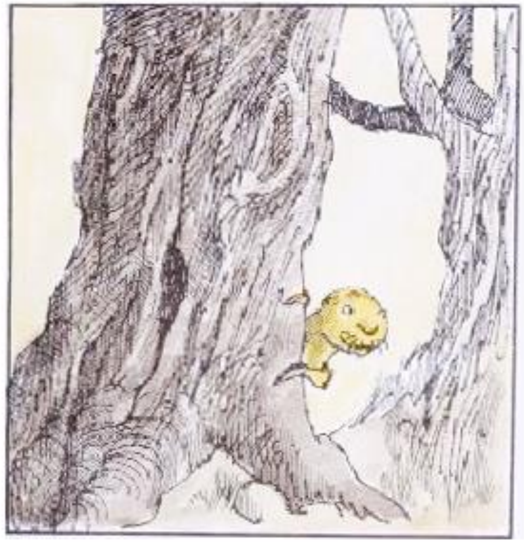
''अगर तुम बहुत दूर गए

तो दूसरे जानवर तुम्हें पकड़ लेंगे।''

पर ऑस्कर ने एक न सुनी,







वह एक खुफिया फिसलपट्टी

बनाने में जुट गया।

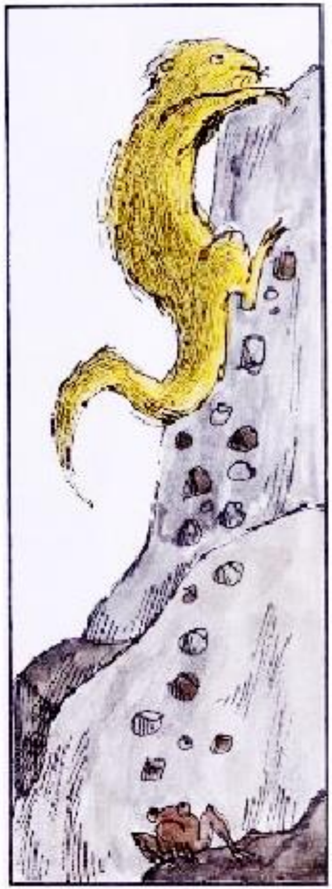
“मैं किसीको बताऊँगा ही नहीं,” उसने कहा।

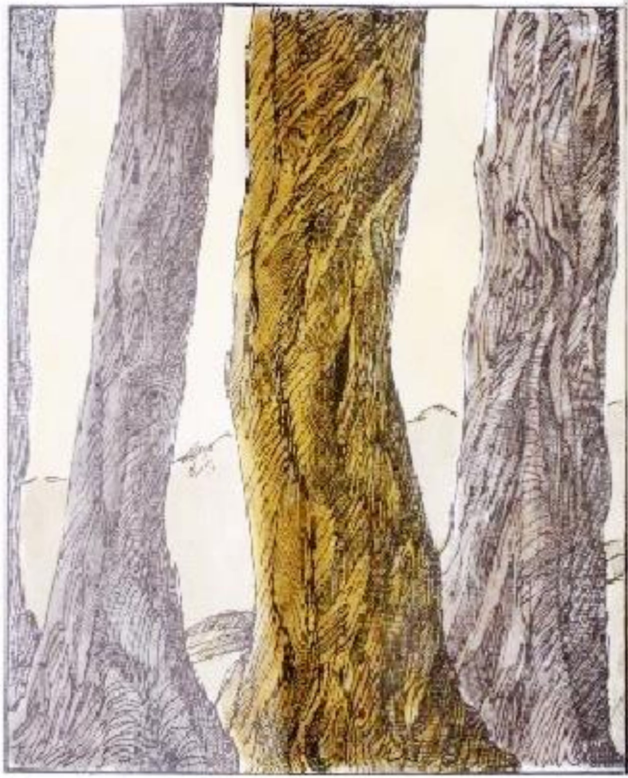
“तो मुझे कोई पकड़ भी नहीं सकेगा।”

फिसलपट्टी उसने
ऊपर बनानी शुरू
कर दी,



और ऊपर,





जंगल के बीच से,



और पहाडों पर।



इसमें बहुत वक्त लगा।



हर दिन जब खत्म होता,

वह फिसलपट्टी पर रपटते नीचे लौटता।



आखिरकार जब वह

अपनी फिसलपट्टी बना चुका,

उतनी ऊँची, जितनी वह बना सकता था,

उसने चारों ओर देखा

दूर नीचे उसे धरती

एक नक्शे-सी पसरी दिखाई दी।



“यह जगह तो बड़ी मज़ेदार लग रही है,” वह बोला।

“मुझे इसकी तहकीकात करनी चाहिए।”

वह पहाड़ से नीचे उतरने लगा।



पर जल्दी ही रास्ता भटक गया।

सारे पेड़ उसे एक सरीखे नज़र आ रहे थे।

उसे समझ ही नहीं आ रहा था कि वह
आया किस रास्ते से था।



अचानक उसे एक अनोखा खयाल सूझा।

"मैं पहाड़ से नीचे उतरा था," उसने खुद से कहा।

"तो मैं अगर फिर से ऊपर चढ़ूं,

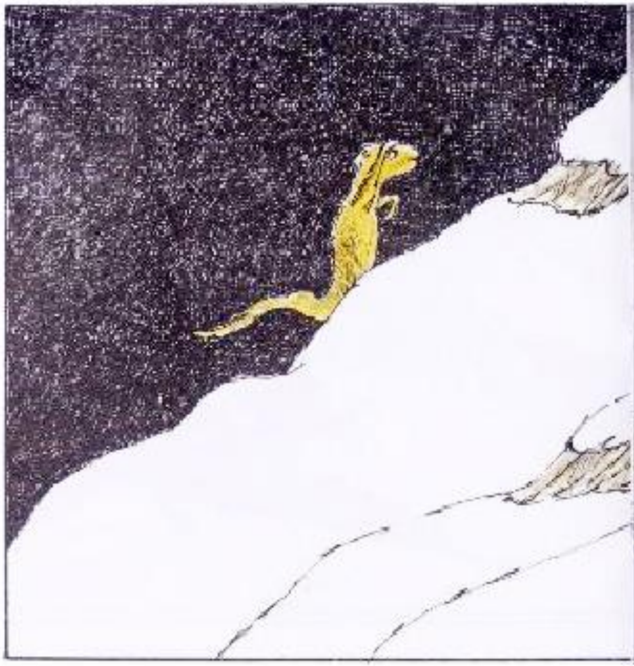
तो मुझे मेरी फिसलपट्टी मिल जाएगी।"



वह पहाड़ चढ़ने लगा। पर . . .

उसे एक बात का इल्म ही नहीं था,

कि उसे एक लोमड़ी देख रही थी,





जिसके पीछे,

एक भेड़िया था जो लोमड़ी को देख रहा था,



जिसे देख रहा था

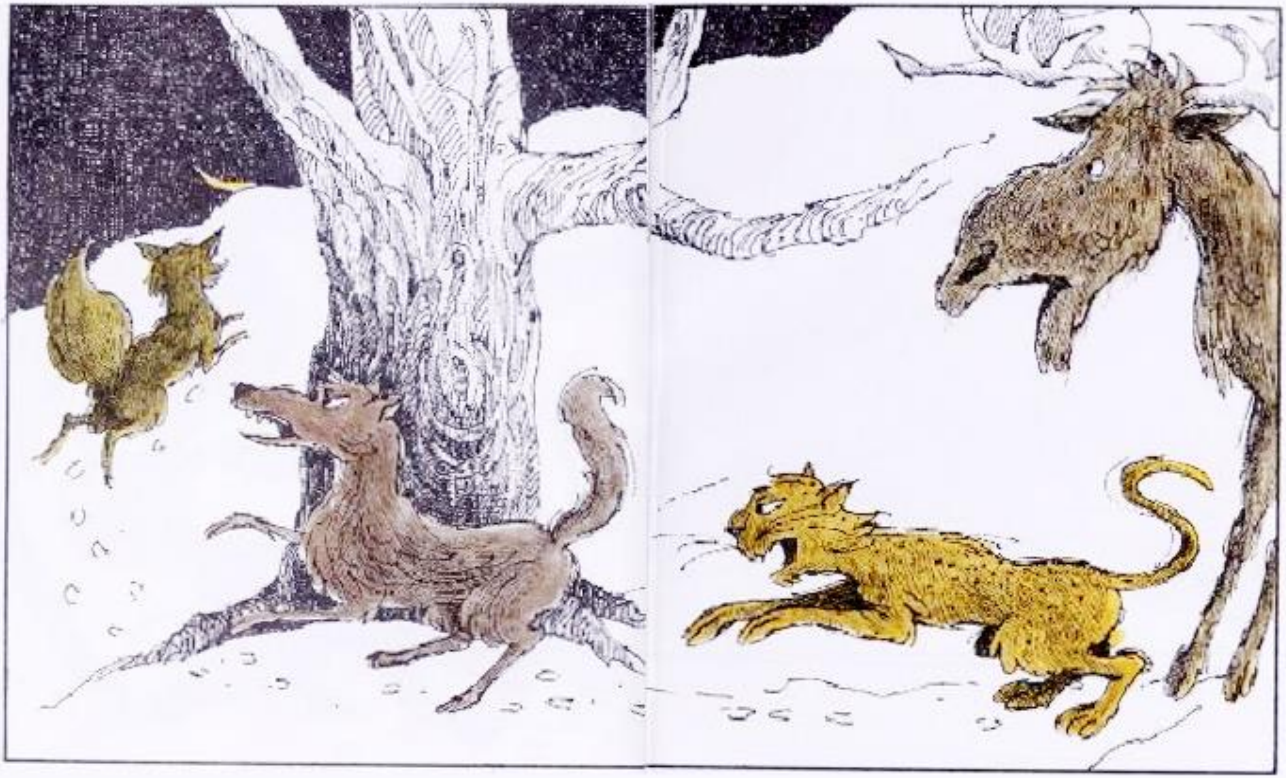
एक पहाड़ी शेर।



और अगर मान सको तो,

पहाड़ी शेर पर नज़र रख रहा था एक बारहसिंगा,

जो यह सोच रहा था कि वह किसी सर्कस के जुलूस में शामिल है।



बारहसिंगा ने अचानक हाँक लगाई

यह जानने कि जुलूस में

कोई दूसरा बारहसिंगा भी है या नहीं।

ऊँऊँऊँ!

इस हाँक से दूसरे जानवर
चौंक कर उछले।



लोमड़ी ऑस्कर पर कूदी!



लोमड़ी पर भेड़िया कूदा!



भेड़िए पर पहाड़ी शेर उछला!

पर ऑस्कर को

उसकी

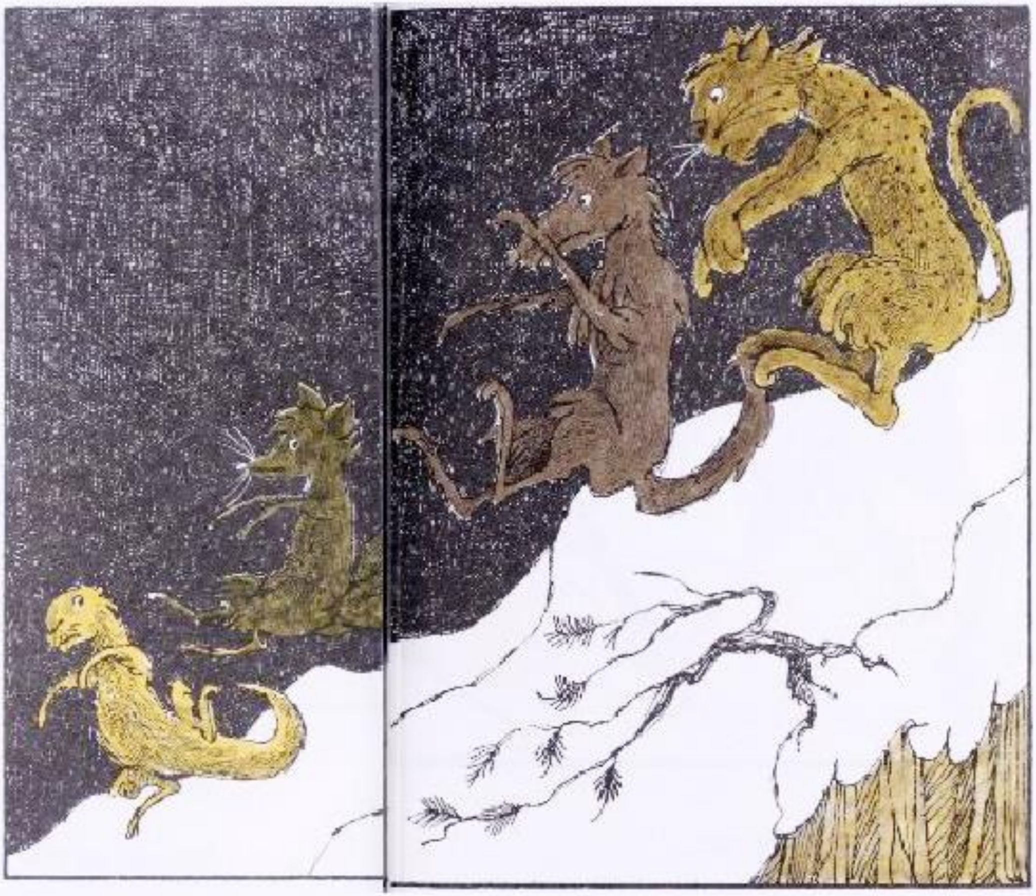
फिसलपट्टी मिल

गई थी,

सो वह उस पर कूदा,

उसके पीछे

सारे जानवर कूदे।





सिवा बारहसिंगे के,

जिसे लगा कि सब के सब पगला गए हैं,

सो वह पलटा और वापस लौट गया।



जब ऑस्कर ताल के पास पहुँचने ही वाला था

कि वही पैना मोड़ सामने था,



और था एक पेड़,

जिसे मोटी पूँछ वाले ऊदबिलाव

ने काट गिराया था!

‘‘मदद करो!’’ ऑस्कर चीखा।

‘‘मेहरबानी से मेरी मदद करो!’’



बिजली की फुर्ती से

मोटे पूँछ वाले ऊदबिलाव ने अपनी
पूँछ से एक रैम्प बना डाला।

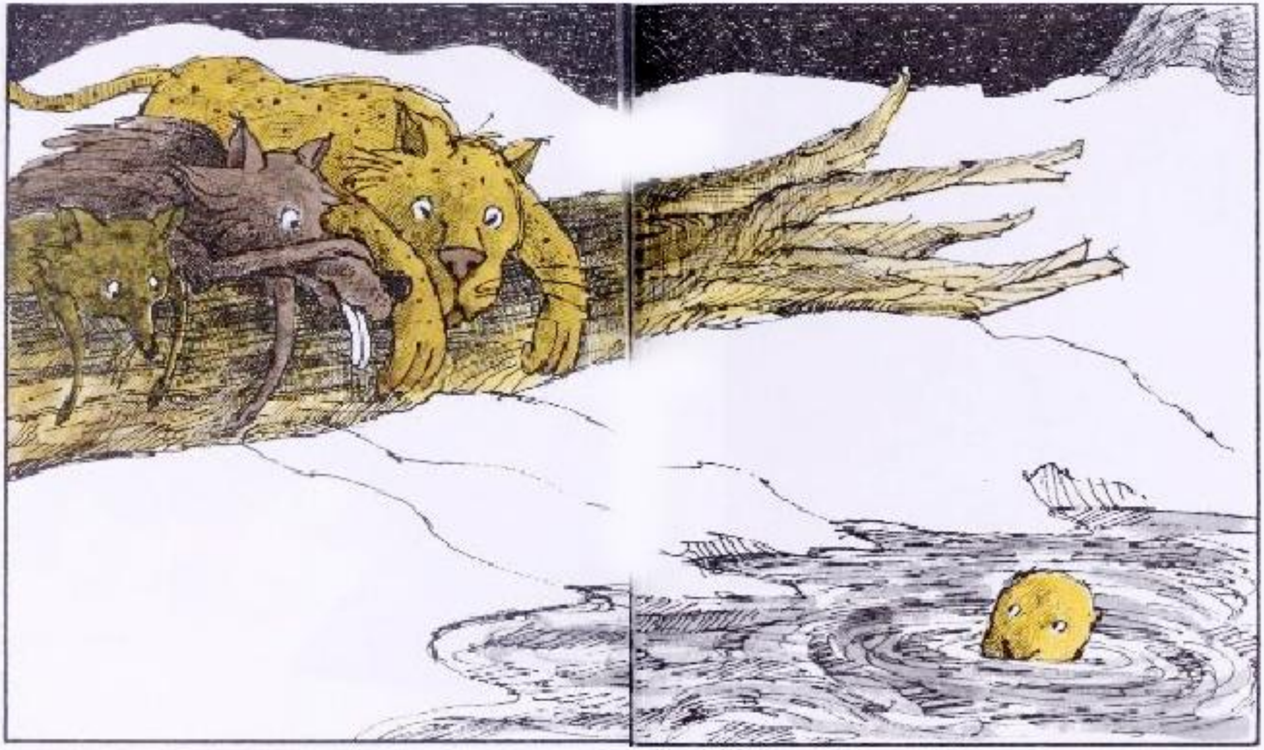
और ऑस्कर सर्रर्र से पेड़
को पार कर गया।



मोटी पूँछ वाला ऊदबिलाव

फर्राटे से सटक लिया।

बाकी जानवर उस पेड़ से जा टकराए,



पर ऑस्कर तो छपाक से ताल

में सुरक्षित जा गिरा था।



"रात के खाने के लिए बड़ी देर से पहुँचे हो,"

उसके पिता ने उलाहना देते कहा।

"तुम थे कहाँ?"



"देर से?" ऑस्कर ने कहा,

"मैं तो खुद ही किसीका खाना बनने जा रहा था - एक लोमड़ी का!"

"अगली बार," उसके पिता ने कहा,

"क्या हम यह कोशिश कर सकते हैं कि हम इतनी होशियारी न छाटें!"



“कौनसी अगली बार?” ऑस्कर ने पलट कर पूछा।

“मैं जहाँ हूँ, वहीं खुश हूँ!”